पाठ 11

कोई नहीं पराया

- श्री गोपाल दास 'नीरज'

69BSZH

प्रस्तुत कविता मनुष्य–मनुष्य के बीच के बंटवारे, विभेद, जाति, लिंग, धर्म, रंग, वर्ण जनित विभिन्न तरह की संकीर्णताओं पर मन में सवाल खड़ा करता है। कवि प्रस्तुत कविता के जरिए धर्म और जाति से जुड़ी तमाम नफ़रत की दीवारों को गिराने का आह्वान करते हैं। कवि एकता का संदेश देते हुए कहते हैं कि उसका आराध्य मनुष्य मात्र है और हर इंसान का घर उसके लिए देवालय है। कवि स्पष्ट कहते हैं कि इस संसार में कोई पराया नहीं है सब ईश्वर की संतान हैं।

ईश्वर को लोग अपनी समझ और सन्दर्भ से अल्लाह, गॉड, राम, रहीम कहते हैं। जिस तरह से फूल और बाग की शोभा पहले है, डाल की शोभा बाद में है, वैसे ही विश्व की शोभा पहले है और मनुष्य,जाति, प्रान्त अथवा राष्ट्र की शोभा बाद में है। इस तरह से कवि "वसुधैव कुटुम्बकम" के सहज संदेश को कविता के जरिए सम्प्रेषित करते हैं।

कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।
मैं ना बँधा हूँ, देश–काल की जंग लगी जंजीर में,
मैं ना खड़ा हूँ जात–पाँत की ऊँची–नीची भीड़ में,
मेरा धर्म ना कुछ स्याही–शब्दों का सिर्फ गुलाम है,
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट–घट में राम है,
मुझसे तुम ना कहो मंदिर–मस्जिद पर सर मैं टेक दूँ,
मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

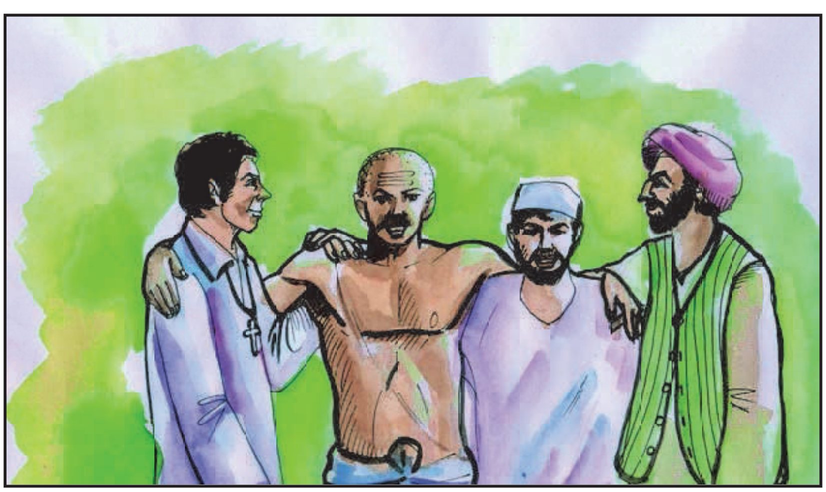

कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इंसान है,
मुझको अपनी मानवता पर बहुत–बहुत अभिमान है,
अरे नहीं देवत्व, मुझे तो भाता है मनुजत्व ही,
और छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार, सकल अमरत्व भी,
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग–सुख की सुकुमार कहानियाँ,
मेरी धरती सौ–सौ स्वर्गों से ज्यादा सुकुमार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

मैं सिखलाता हूँ कि जिओ और जीने दो संसार को,
जितना ज्यादा बाँट सको तुम बाँटो अपने प्यार को,
हँसो इस तरह, हँसे तुम्हारे साथ दलित यह धूल भी,
चलो इस तरह कुचल न जाए पग से कोई फूल भी,
सुख न तुम्हारा सुख, केवल जग का भी इसमें भाग है,
फूल डाल का पीछे, पहले उपवन का शृंगार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि को मानवता पर क्यों अभिमान है ?
2. जात–पाँत के बंधनों ने मानवता को क्या हानि पहुँचाई है ?
3. स्वर्ग–सुख की सुकुमार कहानियों को कवि क्यों नहीं सुनना चाहता है ?
4. कवि संसार को क्या सिखाना चाहता है ?
5. जंग लगी जंजीर किसे और क्यों कहा गया है ?
6. धर्म को कवि ने कुछ स्याह शब्दों का गुलाम क्यों कहा है ?

पाठ से आगे

1. कवि देवत्व और अमरत्व के स्थान पर मनुजत्व को स्वीकारने की बात क्यों करता है ?
2. कविताएँ सभी जाति और धर्म में प्यार और सद्‌भाव का संदेश देती हैं, परन्तु हमारे समाज में ऐसा देखने को क्यों नहीं मिलता? साथियों से बात कर अपनी समझ को लिखिए।
3. कवि के मनोभावों को सार्थक करते हुए अगर हर व्यक्ति संसार को अपना घर मानने लगे तो हम जिस समाज में रहते हैं उस समाज की दशा/स्थिति कैसी होगी? चर्चा कर लिखिए।
4. कवि बनावटी दुनिया को छोड़कर वास्तविक जीवन में मिल–जुलकर रहने पर जोर दे रहा है। यहाँ बनावटी दुनिया और वास्तविक जीवन से आप क्या समझते हैं लिखिए।
5. आप विचार कर लिखिए कि मनुष्य–मनुष्य के बीच नफ़रत की दीवारों को कौन खड़ा करता है, और इस संदर्भ में हमारी क्या भूमिका होनी चाहिए?

भाषा से

1. पाठ में आए हुए निम्नलिखित शब्दों को ध्यान से देखिए –

मैं, जंग, बाँट, जंजीर, हँसना, बँधा, ऊँची, मंदिर, संसार, इंसान, कहानियाँ ये शब्द अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु के प्रयोग के कारण अनुनासिक कहे जाते हैं। अनुनासिक स्वर की ध्वनि मुख के साथ–साथ नासिका द्वार से निकलती है अतः अनुनासिक को प्रकट करने के लिए शिरोरेखा के ऊपर बिंदु या चंद्र बिंदु का प्रयोग करते हैं। (शब्द या वर्ण के ऊपर लगाई जाने वाली रेखा को शिरोरेखा कहते हैं)।

बिंदु या चंद्रबिंदु को हिंदी में क्रमशः अनुस्वार और चंद्रबिन्दु कहा जाता है।

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर–

- अनुनासिक स्वर है जबकि अनुस्वार मूलतः व्यंजन।
- अनुनासिक को परिवर्तित नहीं किया जा सकता जबकि अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है।

- वे शब्द जिनकी मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर न लगीं हों. जैसे अ , आ , उ ऊ के ऊपर अनुनासिक के लिए चंद्रबिन्दु का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में हँस, चाँद, पूँछ।
- शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं वाले शब्दों में अनुनासिक के स्थान पर अनुस्वार अर्थात बिंदु का प्रयोग ही होता है. जैसे – गोंद , कोंपल , जबकि अनुस्वार हर तरह की मात्राओं वाले शब्दों पर लगाया जा सकता है.

हम यहाँ जानने का प्रयास करते हैं कि जब अनुस्वार को व्यंजन मानते हैं तो इसे वर्ण में किन नियमों के अंतर्गत परिवर्तित किया जाता है.। जैसे कंबल, झंडा, धंधा को कम्बल, झण्डा, धन्धा के रूप में उस वर्ग के पंचम अक्षर के साथ लिखा जा सकता है, अर्थात् धंधा शब्द का अनुस्वार हटाना है तो अनुस्वार के बाद वाले वर्ण के पंचम अक्षर का प्रयोग करते हैं।

जैसे– कंबल शब्द के अनुस्वार को वर्ण में बदलना है तो अनुस्वार के बाद 'ब' वर्ण के पंचम अक्षर 'म' का प्रयोग कर अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है। जैसे– कम्बल।

2. "कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है" यहाँ पर संसार शब्द के पर्याय के रूप में जग, विश्व, जगत, लोक, दुनियाँ, भव, आदि हैं। और हर शब्द की महत्ता वाक्य, विषय और काल के अनुसार विशिष्ट होती है। जैसे–

    - **दुनियाँ** में तरह–तरह के लोग होते हैं।
    - ताजमहल **विश्व** की प्रसिद्ध इमारत है।

    इसी प्रकार से जल, पक्षी, सूर्य, सोना, धरती, शब्द के दो–दो पर्यायवाची खोजकर सटीक वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. धार्मिक सद्भाव से संबंधित स्लोगन साथियों के साथ मिलकर लिखिए।
2. देश–प्रेम, मानवीय मूल्य से ओत–प्रोत कविताएँ खोजकर पढ़िए, चर्चा कीजिए।

6A4G5F